वाराणसी (भारत)
अक्टूबर २५, २००१

सन्देश संख्या ४४

प्रार्थना और ध्यान को समझने के लिए पच्चीस सूत्र

१. प्रार्थना विषयासक्ति है, ध्यान तन्मात्राओं के माध्यम से प्रत्यक्षबोध है।

२. प्रार्थना अनुभव है, ध्यान अस्तित्व है।

३. प्रार्थना विभेदकारी चित्तवृत्ति को प्रोत्साहित करता है जबकि ध्यान इसे शान्त करता है।

४. प्रार्थना आकांक्षा है, ध्यान शून्यता है।

५. प्रार्थना अहंकार का तुष्टीकरण है, ध्यान अहंकार का संहार है।

६. प्रार्थना यथार्थ से पलायन है, ध्यान इससे मुक्ति है।

७. प्रार्थना उत्तेजना और मनोरंजन है, ध्यान ऊर्जा और आनन्दबोध है।

८. प्रार्थना माँगने की प्रक्रिया है, ध्यान मंगलमय अवस्था है।

९. प्रार्थना आकांक्षा है, ध्यान पवित्र है।

१०. प्रार्थना सुझाव और चंचलता है, ध्यान आनन्द और आमीन है।

११. प्रार्थना विक्षोभ है, ध्यान दिव्य है।

१२. प्रार्थना पौरोहित्य शिल्प है, ध्यान गहन चैतन्य है।

१३. प्रार्थना खण्ड चैतन्य का पोषक है, ध्यान पूर्णता की धारणशक्ति है।

१४. प्रार्थना बौद्धिकता है, ध्यान प्रज्ञा है।

१५. प्रार्थना भावुकता है, ध्यान निर्मनता है।

१६. प्रार्थना पूर्वाग्रह है, ध्यान विद्यमानता है।

१७. प्रार्थना अन्तराय (अवरोध) है, ध्यान अन्तर्दृष्टि (निष्कपटता) है।

१८. प्रार्थना अस्पता है, ध्यान आलोक है।

१९. प्रार्थना लोभ और भय है, ध्यान शाश्वतत्व में ऊँची उड़ान है।

२०. प्रार्थना मन का कृत्रिम शमन है, ध्यान इसका संतुलन है।

२१. प्रार्थना मन की गतिविधि है, ध्यान निर्मन की क्रिया है।

२२. प्रार्थना अधीनता है, ध्यान समर्पण है।

२३. प्रार्थना द्वैत है, ध्यान अद्वैत है।

२४. प्रार्थना उत्तेजना है, ध्यान तप है।

२५. प्रार्थना कल्पना और लोकाचार है, ध्यान इस प्रकार की सभी तुच्छताओं तथा मूर्खताओं का विसर्जन है।

जय गुरू